IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, December 2024

सावित्री बाई फुले के शैक्षिक विचारों का नई शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ सरिता शर्मा and पायल रायकवार
प्रधानाध्यापिका (एज्युकेशन), अरिहंत कॉलेज, इन्दौर[1]
एम.एड विद्यार्थी, अरिहंत कॉलेज, इन्दौर[2]

सारांश– शोध पत्र में सावित्रीबाई फूले द्वारा सुधार में योगदान का तथा उनके शैक्षिक विचारों को नई शिक्षा नीति के अंतर्गत समाज सुधार में योगदान का अध्ययन किया गया है । भारत की पहली महिला अध्यापिका व समाज सुधारक सावित्रीबाई फूले का पुरा जीवन महिला अधिकारों के लिए समर्पित रहा है । महिला सशक्तिकरण के लिए काम करने के दौरान उन्हें कड़े संघर्षों को झेलना पड़ा / का सामना करना पड़ा । उन्होंने महिलाओं को शिक्षित करने के लिए अथक प्रयास किए और समाज में व्याप्त कुरीतियों जैसे कन्या शिशु हत्या, बाल विवाह, सती प्रथा, छूआछूत आदि के खिलाफ आवाज उठाई ।

सावित्रीबाई ने अपना जीवन एक मिशन की तरह जिया तथा पूरा जीवन समाज सेवा में बिता दिया । वे एक कवयित्री भी थी । आज वर्तमान युग में महिला शिक्षा के माध्यम से महिलाओं को विभिन्न क्षेत्रों में स्वतंत्रता, स्वावलंबन और स्वाभिमान का महत्व प्राप्त हुआ है ।

वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार देश में महिला साक्षरता दर मात्र 64.46 फीसदी है जबकि पुरूष साक्षरता दर 82.14 फीसदी है । उल्लेखनीय है कि भारत की महिला साक्षरता दर विश्व के औसत 79.7 से काफी कम है । इसी संदर्भ में आज नई शिक्षा नीति में महिला शिक्षा हेतु किए गए परिवर्तनों व प्रावधानों को किस प्रकार पहली महिला शिक्षिका सावित्रीबाई फुले के शैक्षिक विचारों से प्रेरित किया गया । नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में बालिकाओं और महिलाओं की शिक्षा में भागीदारी बढ़ाने के लिए कुछ प्रावधान किये गए हैं । जिसमें जेण्डर – समावेशी कोष (पैरा 6.8 एन.ई.पी. 2020) की स्थापना एक नया और क्रांतिकारी कदम है लेकिन ये प्रावधान स्त्रियों के लिए तय किये गए सामाजिक मापदंडों और घरेलू कार्यों के बोझ से मुक्त करवा कर शिक्षा की ओर प्रेरित करना है ।

शब्दकुंजी: सावित्रीबाई फुले की भूमिका, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, समावेशी शिक्षा, सावित्रीबाई फुले के सामाजिक कार्य ।

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in
DOI: 10.48175/568